

“सार्क को पुनः स्थापित करने में भारत की भूमिका: सम्भावनाएं एवं चुनौतियां”

डॉ मंगल देव

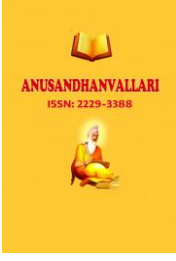
सहायक आचार्य, पी.जी.डी.ए.वी कॉलेज

दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

Abstract

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC), दक्षिण एशियाई देशों से मिलकर बना एक अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय संगठन है, जिसकी स्थापना 1985 में हुई थी। इसकी परिकल्पना दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग, आर्थिक विकास, शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए एक मंच के रूप में की गई थी। जिसका भारत एक संस्थापक सदस्य है। राजनीतिक संघर्षों, विशेष रूप से भारत-पाकिस्तान प्रतिद्वंद्विता, आर्थिक मतभेदों और संस्थागत कमियों के कारण सार्क अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में पूरी तरह सफल नहीं रहा है। यह अध्ययन सार्क के घटते प्रभाव व महत्व के मुद्दे की जाँच करता है और प्राथमिक मुद्दों का समाधान करने का प्रयास करता है। सार्क को एक कार्यात्मक और प्रभावी क्षेत्रीय संगठन के रूप में पुनः प्रतिस्थापित करने में भारत एक रचनात्मक भूमिका कैसे निभा सकता है? इस अध्ययन के उद्देश्यों में क्षेत्रीय सहयोग का नेतृत्व करने के लिए भारत के लिए अवसर की पहचान करना, इसके सामने आने वाली चुनौतियों की जाँच करना और सार्क को पुनर्जीवित करने के लिए ठोस रणनीतियों की पहचान करना शामिल है। मुख्य विषयों में दक्षिण एशिया में आर्थिक एकीकरण, जलवायु परिवर्तन सहयोग, सार्वजनिक स्वास्थ्य उपायों और आतंकवाद विरोधी प्रयासों के लिए भारत का नेतृत्व महत्वपूर्ण है। भारत की भूमिका असमान शक्ति गतिशीलता, चीन के बढ़ते प्रभाव और पाकिस्तान के साथ भू-राजनीतिक चिंताओं के कारण जटिल है। अध्ययन में इस बात पर जोर दिया गया है कि निर्णय लेने में गतिरोध को दूर करने के लिए भारत को पाकिस्तान के साथ संबंधों में सुधार करना चाहिए, सदस्य देशों के बीच विश्वास को बढ़ावा देना चाहिए और संस्थागत ढांचे को आधुनिक बनाना चाहिए। भारत एक सशक्त और समावेशी रुख अपनाकर क्षेत्रीय विकास के लिए एक मंच के रूप में सार्क की क्षमता को साकार करने में सहायता कर सकता है। यह शोध पत्र सार्क को पुनः स्थापित करने के लिए दक्षिण एशियाई भू-राजनीति की जटिलताओं को भारत कैसे संतुलित कर सकता है, इस बारे में एक अंतर्दृष्टि प्रदान करके क्षेत्रीय सहयोग को गति देने की दिशा में एक प्रयास है।

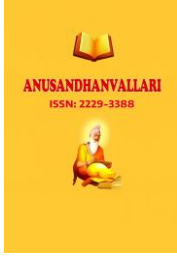
Keywords: सार्क, दक्षिण एशिया, क्षेत्रीय सहयोग और आर्थिक एकीकरण



परिचय (Introduction)

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC), दक्षिण एशियाई देशों का एक संगठन है जिसकी स्थापना 1985 में ढाका में पहले सार्क सम्मेलन में की गई थी, यह दक्षिण एशियाई देशों में आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति और सांस्कृतिक विकास, क्षेत्रीय सहयोग, शांति और स्थिरता को बढ़ावा देता है जबकि सामूहिक आत्मनिर्भरता पर जोर देता है (विनंद, 2024)। भारत, बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका इसके सात संस्थापक सदस्य हैं। अफगानिस्तान औपचारिक रूप से 2007 में संगठन में शामिल हुआ (जेड.एस. अहमद और जहूर, 2015)। मुख्यालय नेपाल के काठमांडू में स्थित है। कई राजनीतिक और आधिकारिक बैठकों के बाद, 1983 में नई दिल्ली में दक्षिण एशियाई विदेश मंत्रियों के सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के दौरान एकीकृत कार्य कार्यक्रम (IPA) का समर्थन किया गया (मोहनन, 1992)। IPA ने स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास और कृषि जैसे क्षेत्रों में सदस्य राज्यों के बीच सहयोग के लिए एक रूपरेखा प्रदान की। सामान्य तौर पर, लक्ष्य सक्रिय सहयोग को बढ़ावा देना, आपसी विश्वास और समर्थन का निर्माण करना और सहयोग को बढ़ाना था।

सहयोग के मामले में दक्षिण एशियाई देशों के असंगत ट्रैक रिकॉर्ड के बावजूद, सदस्य देशों को अपने विवादों को सुलझाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए SAARC शिखर सम्मेलनों के साथ-साथ अनौपचारिक बैठकें आयोजित की गई हैं। इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण भारत और पाकिस्तान द्वारा भारत-पाक सीमा पर भारत के सैन्य अभ्यास "ऑपरेशन ब्रासस्टैक्स" से उपजे तनाव को कम करना है। 1986 में बंगलुरु में आयोजित दूसरे SAARC शिखर सम्मेलन के दौरान, दोनों सदस्य देशों के प्रमुख मिले और अनौपचारिक बातचीत कर रहे थे (क्रेपन और कोहन, 2011)। SAARC चार्टर ("चार्टर") को 8 दिसंबर, 1985 को अपनाया गया था (पटनायक एट अल., 2010)। चार्टर के अनुच्छेद III में यह निर्धारित किया गया था कि सदस्य देशों के राष्ट्राध्यक्षों को क्षेत्रीय सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए साल में कम से कम एक बार या जितनी बार आवश्यक हो, मिलना चाहिए (कीन, 2011)। हालाँकि, भारत और पाकिस्तान के बीच मतभेदों के कारण, 2014 में काठमांडू में पिछली बैठक के बाद से कोई SAARC शिखर सम्मेलन आयोजित नहीं किया गया है (मिलर और गोपालस्वामी, 2016)। ये समस्याएं SAARC के सामने आने वाली कठिनाइयों को उजागर करती हैं, और भारत की चिंताएँ संगठन के ठहराव का एक प्रमुख कारक हैं। भारत और पाकिस्तान मुख्य विवाद के केंद्र में हैं; भारत ने अक्सर पाकिस्तान पर भारतीय क्षेत्र पर हमले करने वाले आतंकवादी संगठनों का समर्थन करने का आरोप लगाया है। 2016 में भारत के जम्मू और कश्मीर में उरी के आसपास के क्षेत्र में एक आतंकवादी घटना से SAARC सहयोग गंभीर रूप से बाधित हुआ था। भारत ने उस वर्ष SAARC शिखर सम्मेलन को रद्द कर दिया, जो पाकिस्तान के इस्लामाबाद में आयोजित किया जाना था, पाकिस्तान पर हमले के लिए जिम्मेदार होने का आरोप लगाने के बाद। 2021 में अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे ने SAARC की गतिशीलता को प्रभावित किया है: पाकिस्तान ने SAARC मंचों में तालिबान की भागीदारी का समर्थन किया है, जबकि अन्य सदस्य देशों ने इसे मंजूरी नहीं दी है (सईद, 2022)। 2024 तक, तालिबान प्रशासन को किसी भी SAARC सदस्य देशों से आधिकारिक मान्यता नहीं मिली है। भारत ने कई तरीकों से SAARC में

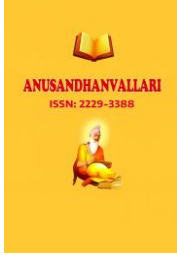


योगदान दिया है। अन्य सदस्य देशों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के अलावा, इसने क्षेत्र में व्यापार और सट्टेबाजी को बढ़ावा दिया है। इसके अतिरिक्त, भारत ने सदस्य देशों के बीच विवादों की मध्यस्थता में प्रमुख भूमिका निभाई है। भारत सार्क के पुनरुद्धार और पुनर्जीवन के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह इसका सबसे बड़ा और सबसे शक्तिशाली सदस्य है। लेख में सार्क की पुनर्स्थापना में भारत की भागीदारी से आने वाले अवसरों और कठिनाइयों की जांच की गई है।

भारत के सामरिक हित और सार्क

सार्क में आठ सदस्य शामिल हैं: अफ़गानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका। यह 0.8° दक्षिण और 38.5° उत्तर तथा 59° पूर्व और 93.6° पूर्व देशांतर के बीच फैला हुआ है, जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 51,000,00 वर्ग किमी है (सिंह एट अल., 2022)। यह क्षेत्र दुनिया की भूमि सतह के 3.4% हिस्से को कवर करता है और वैश्विक कृषि का 14% हिस्सा है, जो दुनिया की 24.75% आबादी का भरण-पोषण करता है (गुरुंग एट अल., 2017)। पर्याप्त आबादी और प्राकृतिक संसाधनों की विविधता के अलावा, 4.359 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर के नाममात्र सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के साथ सार्क में वित्तीय बाज़ारों को स्थापित करने और उनका विस्तार करने की क्षमता है (पनाज़न एट अल., 2024)। सार्क दुनिया का सबसे घनी आबादी वाला और उपजाऊ क्षेत्र है (ए. कुमार और गुरुंग, 2015)।

सार्क देश परंपराओं, पोशाक, भोजन, संस्कृति और राजनीतिक विशेषताओं को साझा करते हैं, जो उन्हें एक साथ काम करने की अनुमति देता है। गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण, प्राकृतिक आपदाएँ, आंतरिक संघर्ष, औद्योगिक और तकनीकी पिछड़ापन, कम जीडीपी और खराब सामाजिक आर्थिक स्थितियाँ उन आम समस्याओं और मुद्दों में से हैं जिनका सामना सभी सार्क देश करते हैं। अपने जीवन स्तर को ऊपर उठाकर, वे साझा समाधानों के साथ विकास और प्रगति के सामान्य क्षेत्र बना सकते हैं। भारत भूमि के मामले में सातवां सबसे बड़ा देश और दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है। 32,87,263 वर्ग किमी के कुल क्षेत्रफल वाला भारत लगभग 3,000 किमी लंबा और 3,000 किमी चौड़ा है। इसका प्रायद्वीपीय रूप इसके आकार में योगदान देता है (पुलैया, 2018)। समुद्र तट पूर्व में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर के बीच लगभग 7,500 किलोमीटर (4,660 मील) तक फैला है (नायक, 2017)। लगभग 5,700 किमी (3,600 मील) की भूमि सीमा पश्चिम में पाकिस्तान, उत्तर में चीन (मुख्य रूप से तिब्बत), नेपाल और भूटान और पूर्व में बांग्लादेश और म्यांमार (बर्मा) के साथ साझा की जाती है (जैन, 2005)। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी के पूर्वी भाग में स्थित हैं, जबकि भारतीय द्वीप समूह लक्षद्वीप पश्चिमी तट पर स्थित हैं। भारत भारतीय उपमहाद्वीप के केंद्र में स्थित है और इसकी भूमि सीमाएँ चार SAARC देशों: बांग्लादेश, भूटान, नेपाल और पाकिस्तान के साथ लगती हैं, जबकि अन्य देश एक-दूसरे के साथ आम भूमि सीमा साझा नहीं करते हैं। भारत के दो पड़ोसी द्वीप राष्ट्र हैं: श्रीलंका और मालदीव तथ्य यह है कि भारत की जनसंख्या एक अरब से अधिक है, जीडीपी के हिसाब से यह दुनिया की पांचवीं

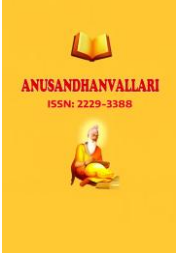


सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, पीपीपी (क्रय शक्ति समता) के हिसाब से तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है (वर्मा एट अल., 2024). 2022-23 के बीच 7.2% से अधिक की आर्थिक विकास दर के साथ (आदर्श एट अल., 2024) वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मियों के एक बड़े पूल के साथ एक मजबूत सेना, और उल्लेखनीय सूचना प्रौद्योगिकी (आईसीटी), अंतरिक्ष और रक्षा-आधारित क्षमताएं सभी इसकी प्रमुख क्षेत्रीय स्थिति को प्रदर्शित करती हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बाद दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा सैन्य खर्च करने वाला भारत, 'मेक इन इंडिया' (सिन्हा, 2023) के लिए लगातार प्रयास करते हुए रक्षा निर्माण में आत्मनिर्भरता हासिल करने का प्रयास कर रहा है। भारत की भू-राजनीतिक और आर्थिक दोनों कारणों से SAARC में रुचि है क्षेत्रीय एकीकरण में वृद्धि से व्यापार, निवेश और आर्थिक सहयोग में वृद्धि हो सकती है, जिससे भारत और उसके पड़ोसी दोनों को लाभ होगा। बाहरी प्रभाव का मुकाबला करना: भारत द्वारा SAARC का मजबूत नेतृत्व क्षेत्र में चीन जैसे बाहरी देशों के बढ़ते प्रभाव को कम करने में मदद कर सकता है। चीन जैसे देशों ने दक्षिण एशिया में बदलते शक्ति संतुलन पर ध्यान दिया है। अकादमिक सहमति के बावजूद कि चीन एशिया की प्रमुख शक्ति बनने का इरादा रखता है, दक्षिण एशिया का भू-राजनीतिक महत्व, विशेष रूप से बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के संबंध में, चीन की महत्वाकांक्षाओं के लिए बड़े परिणाम हैं। नई दिल्ली BRI को एक गुमराह योजना मानती है, और कई दक्षिण एशियाई देश दो क्षेत्रीय प्रमुख खिलाड़ियों के बीच एक मध्य मार्ग चाहते हैं। इस शक्ति परिवर्तन में, भारत ने "देखो और प्रतीक्षा करो की रणनीति" चुनी है, जिसमें चीन के साथ विवश कठोर संतुलन, नरम संतुलन और कूटनीतिक झुंझलाहट के संयोजन का उपयोग किया गया है। चीन के साथ भारत के क्षेत्रीय शक्ति संघर्ष को एक कार्यशील SAARC (KHAN, 2023a) के समर्थन से संतुलित किया जा सकता है। भारत सार्क को पुनर्जीवित करने की पहल करके सॉफ्ट पावर डिप्लोमेसी का उपयोग कर सकता है, भारत अपनी सॉफ्ट पावर को बढ़ा सकता है और एक जिम्मेदार क्षेत्रीय नेता के रूप में अपनी छवि बना सकता है। सार्क भारत को अतिरिक्त जिम्मेदारियाँ स्वीकार करके अपने क्षेत्रीय नेतृत्व को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करता है जो आगे चलकर वैश्विक नेतृत्व की भूमिका में बदल सकता है। भारत की एकट ईस्ट नीति में सार्क द्वारा क्रांतिकारी बदलाव लाया जा सकता है, जो दक्षिण एशियाई और पूर्वी एशियाई देशों को जोड़कर भारत में आर्थिक एकीकरण और समृद्धि को बढ़ाएगा, विशेष रूप से सेवा क्षेत्र में।

सार्क का पुनरुद्धार: भारत के लिए संभावनाएँ

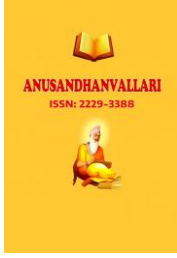
भारत के लिए अपने पड़ोसियों के साथ स्थायी और विश्वसनीय साझेदारी स्थापित करना मुश्किल रहा है, क्योंकि इसकी भौगोलिक स्थिति अलग है, जिसकी सीमाएँ बांग्लादेश, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, मालदीव, भूटान, श्रीलंका और नेपाल सहित विभिन्न आकार, संसाधनों और शक्तियों वाले देशों के साथ मिलती हैं। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कथित तौर पर कहा था "आप अपने दोस्त बदल सकते हैं, लेकिन अपने पड़ोसी नहीं (वर्मा और साहू, 2024)।" नई दिल्ली को अपने घरेलू लक्ष्यों और विदेश नीति के उद्देश्यों के बीच मजबूत संबंध



स्थापित करने चाहिए। भारत की राजनीतिक और आर्थिक समृद्धि एक सुरक्षित, स्थिर और शांतिपूर्ण वातावरण पर निर्भर है, और "कोई भी देश अपने क्षेत्र में आधिपत्य स्थापित किए बिना पड़ोस या दुनिया में खुद को एक विश्वसनीय शक्ति के रूप में स्थापित नहीं कर सकता है (मुनि और मोहन, 2004)।" आक्रामक यथार्थवाद के प्रमुख समर्थक के रूप में, मियरशाइमर ने दावा किया है कि "एक राज्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण परिणाम एक क्षेत्रीय आधिपत्य बनना और संभवतः भूमि पर समीपवर्ती और प्रबंधनीय दूसरे क्षेत्र को नियंत्रित करना है (मियरशाइमर, 2014)।" एक बार क्षेत्रीय आधिपत्य का उद्देश्य पूरा हो जाने के बाद, यह अन्य क्षेत्रों के राष्ट्रों को अपनी सफलता का अनुकरण करने से रोकने का प्रयास कर सकता है। दूसरे शब्दों में, क्षेत्रीय आधिपत्य प्रतिस्पर्धियों का स्वागत नहीं करते हैं (मियरशाइमर, 2014)।

भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त करने के तुरंत बाद एक आदर्शवादी विदेश नीति अपनाई, लेकिन चीन के साथ 1962 के टकराव ने वैश्विक राजनीति की कठोर वास्तविकता को उजागर किया (गांगुली, 2010)। हालाँकि, 1965 में भारत-पाकिस्तान युद्ध ने भारत की विदेश नीति को देश की आवश्यक राष्ट्रीय प्राथमिकता के रूप में सुरक्षा को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित किया। एस. डी. मुनि का दावा है कि भारत का कूटनीतिक व्यक्तित्व और रवैया महत्वपूर्ण कारक हैं जो प्रभावित करते हैं कि यह अपने पड़ोसियों के साथ कैसे बातचीत करता है (बेहुरिया एट अल., 2012)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक सक्रिय क्षेत्रीय कूटनीति रणनीति अपनाई है, जिसमें पड़ोसी देशों को शामिल करने और बातचीत के माध्यम से राजनीतिक संपर्क को मजबूत करने का प्रयास किया गया है। मोदी को एहसास है कि विदेश नीति किसी देश की सीमाओं से शुरू होती है, और इसे क्रियान्वित करने में उनका पहला कदम दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC) के सभी नेताओं को अपने उद्घाटन समारोह में आमंत्रित करना था (दास, 2016)। इस कार्रवाई से यह स्पष्ट हो गया कि वे भारत और उसके पड़ोसियों के बीच संबंधों को मजबूत करने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। यदि भारत एक प्रमुख वैश्विक शक्ति बनने की अपनी आकांक्षाओं को बनाए रखना चाहता है, तो उसे उन मुद्दों को संबोधित करना होगा, जिनके कारण पिछले कई दशकों में उसका क्षेत्रीय प्रभाव कम हुआ है।

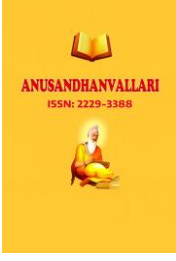
मोदी ने बांग्लादेश, भूटान और नेपाल की अपनी यात्राओं पर इन पड़ोसियों के साथ दीर्घकालिक संबंध स्थापित करने का जानबूझकर प्रयास किया है, न कि उन्हें SAARC कार्यक्रमों या अन्य द्विपक्षीय शिखर सम्मेलनों में फोटो खिंचवाने के अवसर के रूप में उपयोग किया है (किस्लिंग, 2016)। वास्तव में, प्रधानमंत्री के रूप में अपनी पहली विदेश यात्रा के दौरान, मोदी ने दोनों देशों के "अद्वितीय और विशेष बंधन" का हवाला देते हुए भूटान जाने का विकल्प चुना। वहाँ रहते हुए, उन्होंने दोनों देशों के बीच संबंधों को "भारत से भूटान" (बी2बी) संबंधों के रूप में संदर्भित किया और द्विपक्षीय संबंधों को गहरा करने के लिए अपनी सरकार के उद्देश्य को रेखांकित किया (खान, 2023बी)। भूटान और नेपाल की अपनी यात्रा के दौरान, मोदी ने ट्रांस-हिमालयी क्षेत्रवाद की वकालत की और एशियाई राजनीति, पारिस्थितिकी, संस्कृति और क्षेत्रीय सुरक्षा में इसके महत्व पर जोर दिया (चुंग, 2022)। उन्होंने पिछले वर्षों में भारत और इन देशों के बीच बनी संचार और विश्वास की खाई को प्रभावी ढंग से पाट दिया,



चिंताओं को दूर करके और उनके प्रति भारत के रुख को स्पष्ट रूप से बताकर (दास, 2016)। पड़ोसी देश के लिए 2 अरब अमेरिकी डॉलर की नवीनीकृत ऋण सुविधा मोदी की बांग्लादेश की राजनयिक यात्रा का एक प्रमुख परिणाम था, जिसमें पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी भी उनके साथ थीं। एक अन्य परिणाम भूमि सीमा समझौते के माध्यम से सीमा विवाद का समाधान और अनुमोदन था। बांग्लादेश और भारत के बीच संबंधों को लंबे समय से परिभाषित करने वाले अविश्वास और अंतराल को हल करने के लिए उनके द्वारा उठाए गए कदमों की व्यापक रूप से प्रशंसा की गई थी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राजीव गांधी के बाद 28 वर्षों में श्रीलंका का दौरा करने वाले पहले भारतीय प्रधान मंत्री बने (जी कुमार, एन.डी.)। अपनी यात्रा के दौरान, मोदी इसी तरह, दिसंबर 2015 में, मोदी ने युद्धग्रस्त अफगानिस्तान से वादा किया कि भारत पूरी तरह से उसका समर्थन करेगा, उन्होंने कहा कि अफगानिस्तान में भारत की रुचि एक राष्ट्र को नष्ट करने के बजाय जीवन का पुनर्निर्माण करना, संघर्ष शुरू करने के बजाय एक उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करना और प्रतिस्पर्धा करने के बजाय योगदान करना है (गनेई और गनेई, 2022)। अप्रैल 2016 में भारत और मालदीव के बीच एक रक्षा सहयोग कार्य योजना भी तय की गई थी, जिसके बारे में मोदी ने कहा, यह मालदीव और भारत के राष्ट्रीय हितों की स्थिरता और सुरक्षा दोनों से निकटता से जुड़ा हुआ है (वॉन, 2018)। मोदी ने द्वीप देश को यह भी आश्वासन दिया कि नई दिल्ली लोकतांत्रिक संस्थाओं के निर्माण में मदद करेगी, साथ ही दोनों देशों ने SAARC उपग्रह की स्थापना, संरक्षण, पर्यटन और कराधान के क्षेत्रों में अपने रक्षा सहयोग को बढ़ाने के लिए अतिरिक्त समझौतों पर हस्ताक्षर किए (राँय-चौधरी, 2018)। SAARC को एकजुट करने के भारत के प्रयासों को कम करके नहीं आंका जा सकता। भारत अक्सर SAARC के विकास और ज़रूरत के समय अपने पड़ोसियों की मदद करने में सहायक रहा है। सबसे उल्लेखनीय उदाहरणों में से एक कोविड-19 महामारी के दौरान भारत के प्रयास हैं। भारत ने कोरोनावायरस के प्रसार से निपटने के लिए कोविड-19 आपातकालीन निधि की घोषणा की (पटनायक, 2020)। एक वीडियोकांफ्रेंसिंग बैठक के दौरान, प्रधान मंत्री मोदी ने सार्क सदस्यों से वायरस के प्रसार से निपटने के लिए मिलकर काम करने का आग्रह किया, गलतफहमी पर सहयोग पर जोर दिया। अपने वित्तीय समर्थन के हिस्से के रूप में, भारत ने सार्क देशों को टीके भी भेजे।

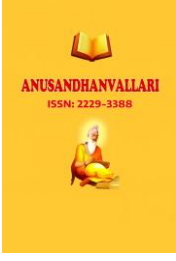
भारत ने सार्क के भीतर अन्य देशों में तकनीकी नवाचारों तक पहुँच को सक्षम करके गति बनाए रखने में मदद की है। विशेष रूप से, इसने बांग्लादेश, भूटान और श्रीलंका (गोयल और गोयल, 2021) सहित दक्षिण एशियाई देशों में राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क ("एनकेएन") लाया। 2017 में, भारत ने दक्षिण एशियाई उपग्रह लॉन्च किया, जिसमें मालदीव, भूटान, अफगानिस्तान, नेपाल और पाकिस्तान को छोड़कर अन्य सार्क राज्यों में प्रदर्शन टर्मिनल स्थापित किए गए (स्ट्रोइकोस, 2024)। सूक्ष्म, लघु और मध्यम आकार के व्यवसायों को वित्त प्रदान करने के लिए, सार्क विकास कोष (एसडीएफ) और भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) ने अप्रैल 2016 में एक समझौते पर हस्ताक्षर किए (एन. कुमार, 2016)। इस समझौते के तहत, दोनों संगठन सार्क देशों में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, क्षमता निर्माण और एसएमई वित्तपोषण के लिए उपयुक्त वित्तीय उत्पाद तैयार करने के लिए मिलकर काम करेंगे।



दक्षिण एशिया भूस्थिर संचार उपग्रह (GSAT-9) को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) द्वारा 4 मई, 2017 को लॉन्च किया गया था, जिसका लक्ष्य पाकिस्तान को छोड़कर सभी SAARC देशों के बीच संचार को बेहतर बनाना था (लेले, 2020)। यह उपग्रह टेलीमेडिसिन और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में SAARC सदस्यों के बीच बेहतर सहयोग की सुविधा प्रदान करेगा। इसके अलावा, यह उपग्रह SAARC देशों को बेहतर भू-भाग मानचित्रण, प्राकृतिक संसाधन पहचान और आपदा प्रबंधन और पूर्वानुमान में मदद कर सकता है। इसी तरह, "पड़ोसी पहले नीति" बताती है कि भारत सहकारी पहल और साझेदारी के माध्यम से दक्षिण एशियाई देशों से कैसे जुड़ सकता है। दक्षिण एशियाई देशों के साथ संबंधों के पुनर्निर्माण के लिए, यह नीति महत्वपूर्ण रही है। SAARC को फिर से स्थापित करने के लिए भारत उन पहलों में अग्रणी भूमिका निभा सकता है जो कनेक्टिविटी और अंतर-क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा देते हैं, सभी सदस्य देशों के लिए जीत की स्थिति बनाने के लिए अपनी वित्तीय ताकत का लाभ उठाते हैं। बंदरगाहों, रेलमार्गों और राजमार्गों सहित बुनियादी ढाँचे का विकास अधिक कुशल व्यापार प्रवाह को बढ़ावा दे सकता है। प्रौद्योगिकी आदान-प्रदान और ई-गवर्नेंस परियोजनाओं के माध्यम से डिजिटल संपर्क को बढ़ावा देना, जिसमें सार्क राज्यों में विकास संबंधी असमानताओं को पाटने की क्षमता है। दक्षिण एशिया विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों, जैसे पानी की कमी, कठोर मौसम और समुद्र के स्तर में वृद्धि के प्रति संवेदनशील है। भारत विशेषज्ञता, प्रौद्योगिकी और संसाधनों को साझा करके क्षेत्रीय जलवायु परिवर्तन पहलों का नेतृत्व कर सकता है। नवीकरणीय ऊर्जा, वनीकरण और आपदा प्रबंधन में संयुक्त पहल सहयोग के वास्तविक लाभों को दर्शा सकती है। सार्वजनिक स्वास्थ्य में क्षेत्रीय सहयोग के महत्व को COVID-19 महामारी ने उजागर किया। महामारी के दौरान भारत की वैक्सीन कूटनीति ने स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रमों का नेतृत्व करने की इसकी क्षमता का प्रदर्शन किया। जहां तक सुरक्षा का सवाल है, संगठित अपराध और सीमा पार आतंकवाद से निपटने के लिए एक टीम के प्रयास की जरूरत होती है। भारत एक क्षेत्रीय ढांचे को बढ़ावा दे सकता है जो सुरक्षा चिंताओं का मुकाबला करने के लिए साझा जिम्मेदारी पर जोर देता है।

सार्क का पुनरुद्धार: भारत के लिए चुनौतियाँ

भारत अपने छोटे पड़ोसी देशों की संवेदनशीलता के कारण क्षेत्रीय सहयोग लाने के अपने प्रयासों में सावधान रहा है। वास्तव में, भारत खुद को एक अजीब स्थिति में पाता है यदि वह क्षेत्रीय सहयोग बढ़ाने के लिए तेजी से कार्रवाई करता है, तो अन्य सदस्य उसके आधिपत्य के इरादों पर संदेह कर सकते हैं। दूसरी ओर, यदि भारत धीमी गति से आगे बढ़ता है तो उस पर सार्क में रुचि न रखने का आरोप लगाया जाता है। सार्क की प्रगति में सबसे बुनियादी बाधा भारत और पाकिस्तान के बीच चल रहा तनाव है। राजनीतिक अविश्वास और अनसुलझे क्षेत्रीय संघर्षों ने अक्सर सार्क पहल को पटरी से उतार दिया है। 2016 की उरी घटना और संबंधित तनावों ने सार्क बैठक को स्थगित कर दिया, जिससे क्षेत्रीय सहयोग की नाजुकता को रेखांकित किया गया (बिश्वकर्मा और हू, 2022)। बैरी बुज़ान के क्षेत्रीय सुरक्षा जटिल सिद्धांत ("आरएससीटी") के अनुसार, सुरक्षा परस्पर निर्भरता की विशेषता क्षेत्रों

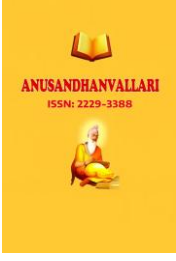


या क्षेत्रों में मैत्री और शत्रुता के स्थायी पैटर्न से होती है (एस. अहमद, 2023)। किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र के साथ शत्रुता या सांस्कृतिक संबंध जैसे ऐतिहासिक कारक क्षेत्रीय सुरक्षा परिसर की अनूठी विशेषताओं को प्रभावित करते हैं।

पाकिस्तान संगठन को भारत के लिए दक्षिण एशिया में अपने आर्थिक और राजनीतिक प्रभुत्व को मजबूत करने के लिए एक उपकरण के रूप में मानता है, जिसके परिणामस्वरूप विश्वास की कमी होती है, परिणामस्वरूप, दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार समझौता (SAFTA) और दक्षिण एशिया तरजीही व्यापार समझौता (SAPTA) सहित कई आर्थिक सुधार सफल नहीं हुए (महासेठ, n.d.)। ये समझौते महत्वपूर्ण थे क्योंकि उन्होंने टैरिफ कम कर दिए और गैर-टैरिफ बाधाओं को समाप्त कर दिया। भारत ने हमेशा तर्क दिया है कि आर्थिक सहयोग आवश्यक है, भले ही वह राजनीतिक और सुरक्षा मतभेदों को स्वीकार करता हो। SAARC को फिर से स्थापित करने में भारत की भूमिका आपसी अविश्वास से कमजोर हुई है। SAARC सदस्यों, विशेष रूप से छोटे देशों और भारत के बीच व्यापक आर्थिक असमानताओं के कारण उचित आर्थिक सहयोग प्राप्त करना मुश्किल रहा है। भारत का सकल घरेलू उत्पाद पाकिस्तान से आठ गुना है, जिसके कारण व्यापार के संबंध में अपेक्षाएँ और बातचीत असंतुलित होती हैं (एक्सेलसियर, 2024)। कम बैठकों की आवृत्ति ने भारत के साथ विश्वास संबंधी चिंताओं को जन्म दिया और सदस्य देशों के बीच अलग-अलग अपेक्षाएँ क्षेत्रीय लक्ष्यों की दिशा में प्रगति में बाधा डालती हैं। कम बैठकों के कारण, सदस्य देशों ने द्विपक्षीय बातचीत को बाहरी बना दिया है, जिससे क्षेत्र में चीनी प्रभाव बढ़ गया है, विशेष रूप से पाकिस्तान-चीन संबंधों में, जैसा कि चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे जैसी पहलों से प्रदर्शित होता है, साथ ही देश की गंभीर आर्थिक समस्याओं के परिणामस्वरूप चीनी प्रभाव श्रीलंका तक भी फैल गया है। चीन का बढ़ता प्रभाव: दक्षिण एशिया में चीन के आर्थिक निवेश, विशेष रूप से बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के माध्यम से, ने भारत के अपने पड़ोसियों पर प्रभाव को कम कर दिया है (गोंग, 2019)। नेपाल, श्रीलंका और पाकिस्तान जैसे सदस्य देशों का चीन के साथ बढ़ता गठबंधन, SAARC का नेतृत्व करने के भारत के प्रयासों को और अधिक चुनौतीपूर्ण बनाता है। SAARC के प्रति भारत के रुख को BIMSTEC जैसे वैकल्पिक क्षेत्रीय ढाँचों का समर्थन करने और BBIN पहल जैसे उप-क्षेत्रीय गठबंधन बनाने की प्रवृत्ति द्वारा परिभाषित किया गया है, जिसमें बांग्लादेश, भूटान, भारत और नेपाल शामिल हैं (चकमा, 2018)। ये गतिविधियाँ क्षेत्रीय प्रभावों को संतुलित करने तथा सार्क के भीतर मुद्दों का समाधान करने के भारत के रणनीतिक लक्ष्यों के अनुरूप हैं।

निष्कर्ष

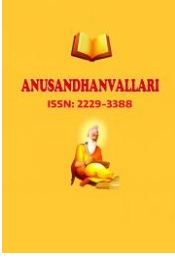
SAARC को फिर से स्थापित करने में भारत की भागीदारी एक जिम्मेदारी और अवसर दोनों हैं। भारत में संगठन को अपने इच्छित उद्देश्यों की ओर मार्गदर्शन करने की क्षमता है क्योंकि यह सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और एक क्षेत्रीय नेता है। हालाँकि, इसके लिए एक रणनीतिक, समावेशी और क्रमिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भू-राजनीतिक चुनौतियों से निपटते हुए सभी सदस्य देशों की चिंताओं को संबोधित करता है।



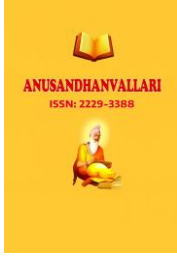
भारत संस्थागत प्रक्रियाओं को बढ़ावा देकर, समान विकास को बढ़ावा देकर और विश्वास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय सहयोग और उन्नति के लिए एक मंच के रूप में अपनी क्षमता को साकार करने में SAARC की सहायता कर सकता है। SAARC को फिर से स्थापित करना न केवल एक भू-राजनीतिक अनिवार्यता है, बल्कि दक्षिण एशिया में साझा समृद्धि और स्थिरता का मार्ग भी है। यह पत्र दर्शाता है कि कैसे भारत का नेतृत्व SAARC को आर्थिक एकीकरण, सतत विकास और साझा सुरक्षा ढांचे की ओर धकेल सकता है। एक व्यावहारिक रणनीति यह हो सकती है कि उप-क्षेत्रीय परियोजनाओं को और अधिक व्यापक क्षेत्रीय सहयोग के अग्रदूत के रूप में मजबूत किया जाए। इसके अलावा, सक्षम नेतृत्व के तहत सार्क की क्रांतिकारी क्षमता लोगों से लोगों के बीच संपर्क को बढ़ावा देने और सार्वजनिक स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन जैसी अंतरराष्ट्रीय चिंताओं से निपटने में भारत के योगदान से पता चलती है। भारत सहयोगात्मक पहलों के माध्यम से प्रत्यक्ष लाभ प्रदर्शित करके क्षेत्रीय ढांचे में विश्वास और भागीदारी बहाल कर सकता है। सार्क को एक परिचालन संगठन के रूप में फिर से स्थापित करना न केवल भारत के लिए एक कूटनीतिक लक्ष्य है, बल्कि इस क्षेत्र में क्षेत्रीय शांति और समृद्धि बनाए रखने के लिए भी आवश्यक है। एक सुविचारित, समावेशी और लचीली रणनीति के साथ, भारत में सार्क को दक्षिण एशिया के साझा मुद्दों और महत्वाकांक्षाओं से निपटने के लिए एक संपन्न मंच में बदलने की क्षमता है।

संदर्भ ग्रन्थ -

- [1] आदर्श, आर., शिवसुब्रमण्यम, के., कुमारसामी, पी., और रमेश, के. (2024)। भारत में सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का प्रभाव विश्लेषण। भविष्य के व्यावसायिक रुझानों की प्रत्याशा में: कृत्रिम बुद्धिमत्ता नवाचारों को नेविगेट करना: स्प्रिंगर खंड 2. पृष्ठ 145-153।
- [2] अहमद, एस. (2023)। क्षेत्रीय सुरक्षा जटिल सिद्धांत: दक्षिण एशियाई संदर्भ। वैश्विक राजनीति पत्रिका, 1(1), 13-27।
- [3] अहमद, जेड.एस., और जहूर, एम. (2015)। सार्क में अफगानिस्तान: संगठनात्मक विस्तार का एक महत्वपूर्ण मूल्यांकन। दक्षिण एशियाई सर्वेक्षण, 22(2), 171-188।
- [4] बेहुरिया, ए.के., पटनायक, एस.एस., और गुप्ता, ए. (2012)। क्या भारत की कोई पड़ोस नीति है? रणनीतिक विश्लेषण, 36(2), 229-246.
- [5] बिश्वकर्मा, जे. के., और हू, जेड. (2022). दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC) के लिए समस्याएँ और संभावनाएँ. राजनीति और नीति, 50(1), 154-179.
- [6] चकमा, बी. (2018). SAARC और क्षेत्र-निर्माण: क्या दक्षिण एशिया एक क्षेत्र है? जर्नल ऑफ द इंडियन ओशन रीजन, 14(2), 189-205.
- [7] चुंग, के. (2022). इंडो-पैसिफिक में बहुपक्षवाद: संकल्पनात्मक और परिचालन संबंधी चुनौतियाँ: स्वर्ण सिंह और रीना मारवाह द्वारा संपादित, लंदन, रूटलेज, 2023, XV+ 208 पृष्ठ, £ 104, आईएसबीएन 978-1-032-24469-3 (हार्डकवर) हार्डबैक, आईएसबीएन 978-1-003-27871-9 (ईबुक)।



- [8] दास, ए. (2016) । भारत की पड़ोस नीति: चुनौतियाँ और संभावनाएँ। जिंदल जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स, 4(1), 18-37।
- [9] एक्सेलसियर, डी. (2024, 15 नवंबर) । भारत सार्क की चुनौतियों का समाधान कैसे कर सकता है? डेली एक्सेलसियर।
- [10] <https://www.dailyexcelsior.com/how-can-india-solve-the-challenges-of-saarc/>
- [11] गनी, आर. ए., और गनी, एम. ए. (2022)। भारत की अफ़गानिस्तान नीति: अमेरिका की वापसी के बाद रणनीतिक स्थान की तलाश। मानविकी और सामाजिक विज्ञान संचार, 9(1), 1-8।
- [12] गांगुली, एस. (2010)। भारत की विदेश नीति: पुनरावलोकन और संभावना। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस नई दिल्ली।
- [13] 12- गोयल, एम., और गोयल, एम. (2021). द्विपक्षीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग: पड़ोसी देशों के साथ भारत। दक्षिण एशियाई देशों के लिए विज्ञान कूटनीति: अंतर्दृष्टि और सफलताएँ, 67-83।
- [14] गोंग, एक्स. (2019). बेल्ट एंड रोड पहल और दक्षिण पूर्व एशिया में चीन का प्रभाव। द पैसिफिक रिव्यू, 32(4), 635-665।
- [15] गुरुंग, टी., जोशी, पी., बोख्तियार, एस., और गिरी, एस. (2017). सार्क क्षेत्र में कृषि अनुसंधान: आम चुनौतियाँ और प्राथमिकताएँ। सार्क कृषि केंद्र, ढाका, बांग्लादेश।
- [16] जैन, आर. (2005). भारत और सार्क: एक विश्लेषण। इंडियन जर्नल ऑफ एशियन अफेयर्स, 18(2), 55-74।
- [17] कीन, डी. (2011). अल्पसंख्यक और समूह अधिकारों पर दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय चार्टर का मसौदा: एक तुलनात्मक क्षेत्रीय विश्लेषण। यूरोपीय अल्पसंख्यक मुद्दों की ऑनलाइन वार्षिकी, 8(1), 269-309।
- [18] खान, टी. ए. (2023ए) । सीमित कठोर संतुलन: चीनी घेरेबंदी के प्रति भारत की जवाबी प्रतिक्रिया की व्याख्या। इंडो-पैसिफिक अफेयर्स की पत्रिका, 6(3) ।
- [19] खान, टी. ए. (2023बी) । सीमित कठोर संतुलन: चीनी घेरेबंदी के प्रति भारत की जवाबी प्रतिक्रिया की व्याख्या। इंडो-पैसिफिक मामलों की पत्रिका, 6(3) ।
- [20] कीसलिंग, एच. (2016) । आस्था, एकता, अनुशासन: पाकिस्तान की अंतर-सेवा-खुफिया (आईएसआई)। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- [21] क्रेपोन, एम., और कोहन, एन. (2011)। दक्षिण एशिया में संकट: रुझान और संभावित परिणाम। हेनरी एल. स्टिमसन सेंटर।
- [22] कुमार, ए., और गुरुंग, टी. (2015) । सार्क क्षेत्र में जल-ऊर्जा-खाद्य गठजोड़ पर सार्क दृष्टिकोण।
- [23] कुमार, जी. (n.d.)। भारत और श्रीलंका संबंध: प्रधानमंत्री राजीव गांधी और नरेंद्र मोदी शासन के दौरान।
- [24] कुमार, एन. (2016)। दक्षिण एशिया में राष्ट्रीय विकास बैंक और टिकाऊ बुनियादी ढाँचा।
- [25] लेले, ए. (2020) । अंतरिक्ष में भारत: एक रणनीतिक अवलोकन। अंतरिक्ष सुरक्षा की पुस्तिका: नीतियाँ, अनुप्रयोग और कार्यक्रम, 571-587।
- [26] महासेठ, एच. (n.d.) । सार्क और आसियान में भारत और इंडोनेशिया का भू-राजनीतिक प्रभाव।
- [27] मियर्सहाइमर, जे. जे. (2014)। चीन का अशांत उदय। द रियलिज्म रीडर में रूलेज (पृष्ठ 464-467)।



- [28] मिलर, एम. सी., और गोपालस्वामी, बी. (2016)। सार्क खत्म हो चुका है; सार्क अमर रहे। द डिप्लोमेट, 333।
- [29] मोहनन, बी. (1992) । दक्षिण एशिया में क्षेत्रवाद की राजनीति। अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्री।
- [30] मुनि, एस. डी., और मोहन, सी. आर. (2004)। उभरता एशिया: भारत के विकल्प। अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन, 41(3), 313-333।
- [31] नायक, एस. (2017)। भारत में तटीय क्षेत्र प्रबंधन - वर्तमान स्थिति और भविष्य की जरूरतें। भू-स्थानिक सूचना विज्ञान, 20(2), 174-183।
- [32] पनाज़न, ओ., घोरघे, सी., और कैलेफारियू, ई. (2024) । सार्क क्षेत्र में भू-राजनीतिक जोखिम और शेयर बाज़ार में अस्थिरता। अर्थशास्त्र, 18(1), 20220124।
- [33] पटनायक, एस. एस. (2020)। सार्क कोविड-19 फंड: महामारी के लिए क्षेत्रीय प्रतिक्रिया को कैलिब्रेट करना। रणनीतिक विश्लेषण, 44(3), 241-252।
- [34] पटनायक, एस. एस., बिष्ट, एम., और बोम्माकांति, के. (2010)। सार्क: इतिहास के माध्यम से एक यात्रा।
- [35] पुलैया, टी. (2018) । भारत में जैव विविधता। ग्लोबल बायोडायवर्सिटी में (पृष्ठ 109-144) । एप्पल एकेडमिक प्रेस।
- [36] रॉय-चौधरी, आर. (2018)। अपने साझा दक्षिण एशियाई पड़ोस में चीन के प्रति भारत का दृष्टिकोण: सहयोग बनाम प्रतिस्पर्धा। समकालीन राजनीति, 24(1), 98-112।
- [37] सईद, ए. (2022) । पाकिस्तान-अफगान संबंधों का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण (2017-2021) । फराबी जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 8(1), 18-27।